गंगा दास (१८२३- १९१३) अपने समय के प्रसिद्ध सन्त थे। उनके शिष्यों की संख्या भी काफी थी। भारत के सभी धार्मिक स्थलों की यात्रा करके वे अन्त में गढ़मुक्तेश्वर, जिला - गाजियाबाद में रहने लगे थे। महान दार्शनिक, भावुक भक्त, उदासी महात्मा और एक महाकवि के रूप में भी इन्हें काफी ख्याति मिली थी। उनके अनेक शिष्य जैसे - चेतराम, बालूराम, दयाराम, मोतीराम, मोहनलाल आदि उनके पद गा-गाकर लोगों को सुनाया करते थे। अनेक विद्वान उन्हें खड़ी बोली का प्रथम कवि मानते हैं।

बोए पेड़ बबूल के, खाना चाहे दाख।
ये गुन मत परगट करे, मन के मन में राख।।
मन के मन में राख, मनोरथ झूठे तेरे।
ये आगम के कथन, कदी फिरते ना फेरे।
गंगादास कह मूढ़, समय बीती जब रोए।
दाख कहाँ से खाय, पेड़ कीकर के बोए।।

****

तेरे बैरी तुझी में, हैं ये तेरे फैल।
फैल नहीं तो सिद्ध है, निर्मल में क्या मैल।।
निर्मल में क्या मैल, मैल बिन पाप कहाँ है।
बिना पाप फिर आप, आप में ताप कहाँ है।
गंगादास प्रकाश, भये फिर कहाँ अँधेरे।
और सब जगत मित्र, फैल दुश्मन हैं तेरे ।।

****

सोई जानो जगत में, उत्तम जीव सुभाग।
मधुर बचन निरमानता,सम, दम, तप, बैराग।।
सम, दम, तप, बैराग, दया हिरदे में धारैं।
मुख से बोले सत्त, सदा ना झूठ उचारैं।
गंगादास शुभ कर्म, करें तजकर बगदोई ।
तन मन पर उपकार, समझ जन उत्तम सोई।।

****

अन्तर नहीं भगवान में, राम कहो या संत।
एक अंग तन संग में, रहे अनादि अनन्त।।
रहे अनादि अनन्त, सिद्ध, गुरु, साधक, चेले।
तब हो गया अभेद, भेद सतगुरु से ले ले।
गंगादास ऐ आप, ओई मंत्री अर मंतर।
राम संत के बीच, कड़ी रहता ना अंतर।।

****

पावैं शोभा लोक में, जो जन विद्यामान।
जिन विद्या बल है नहीं, सो नर भूत समान।।
सो नर भूत समान, पशू, पागल, परवारी ।
बिन विद्या नर सून, ताल जैसे बिन वारी ।
गंगादास ये जीव, जाति नर पशू कहावैं।
बिना सुगंधी फूल, कहीं आदर ना पावैं।।

****

पापी के कोई भूलकर, मत ना बसो पड़ौस।
नीच जनों के संग में, निर्दोषी गहें दोस।।
निर्दोषी गहें दोस, दोस देते दुख भारी।
बिगड़ जाये दो लोक, भीख न मिले उधारी।
गंगादास कहें, नीच संग डूबें परतापी ।
तजें गाम, घर, देस, जहाँ बसते हों पापी ।।

****

मोहताजों की खबर ले, तेरी लें भगवान ।
जस परगट दो लोक में, होगा निश्चय जान ।।
होगा निश्चय जान, मान वेदों का कहना।
जो डाले उपकार, उदय होता है लहना।
गंगादास लें राम, खबर उनके काजों की।
जो लेते हैं खबर, जगत में मोहताजों की।। ।

****

माला फेरों स्वांस की, जपो अजप्पा जाप।
सोहं सोहं सुने से, कटते हैं सब पाप।।
कटते हैं सब पाप, जगे सर में कर मंजन।
छः चक्कर ले शोध, अंत पावै मनरंजन।
गंगादास प्रकाश, होय खुलते घट ताला।
मानो मेरा कहा, भजो स्वांस की माला।।

****

उल्लू को अचरज लगे, सुन सूरज की बात।
अन्ध होत दिन के उदय, देत दिखाई रात।।
देत दिखाई रात, रवि को मिथ्या माने।
औरों को कह मूढ़, आपको पण्डित जाने।
गंगादास गुरुदेव, करें क्या चेले भुल्लू ।
रवि को करें अभान, जन्म के अंधे उल्लू।।

****

सोवेगा जो कोई कदी, जदी पड़ेंगे चोर ।
जागो तो खतरा नहीं, इस सारे में और ।।
इस सारे में और रोज दिन में आती हैं ।
दो ठगनी ठग एक सदा ठग-ठग खाती हैं ।।
गंगादास कहें आँख खुले पीछे रोवेगा ।
तस्कर लेजां माल-जान जो कोई सोवेगा ।।

****